चतुर्थ वर्ग

8. अधोलिखित पद्यो की विशद व्याख्या कीजिए- 10

(त) नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता
नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा।
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो
गोधूलिः सा मुनिभिरूदिता सर्वकार्येषु शस्ता।।

(थ) गान्धर्वादिविवाहेऽर्काद्वेदनेत्रगुणेन्दवः।
कुप्रगाङ्गाग्निभूरामास्त्रिपद्यां न शुभाःशुभाः।।

9. अधोलिखित पर टिप्पणियां लिखिए- 10

(य) दशयोग दोष।

(र) कर्त्तरी दोषः।

A **(Printed Pages 4)**

Roll No. _____

AS-2225

एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

ज्योतिर्विज्ञान

चतुर्थ प्रश्न-पत्र

(मुहूर्त ज्योतिष)

समय - तीन घण्टे **पूर्णाङ्कः 70**

नोट : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है। प्रत्येक वर्ग से **एक-एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. अधोलिखित लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए-10×3=30

(क) 'कीलक' नामक संवत्सर का फल लिखिए।

(ख) पूर्णा तिथियां कौन हैं? पूर्णा तिथियों में कौन से कार्य करने चाहिए।

(ग) बुधवार के कृत्य कौन से हैं? स्पष्ट कीजिए।

(घ) स्वाती नक्षत्र के कृत्यों का उल्लेख कीजिए।

(ड.) पञ्चक नक्षत्र कौन से हैं और इन नक्षत्रों में कौन से कार्य निषिद्ध हैं?

(च) प्रश्न के द्वारा बालविधवा योग का ज्ञान कैसे किया जा सकता है? बतलाइये।

(छ) उत्तम कन्याओं के लक्षण लिखिए।

(ज) वर वरण के मुहूर्त को स्पष्ट कीजिए।

(झ) विवाह में पात दोष को स्पष्ट कीजिए।

(ञ) जामित्रदोष किसे कहते हैं? बतलाइये।

प्रथम वर्ग

2. निम्नलिखित श्लोकों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए : 10

(च) पितृपक्षे त्रयोदश्यां हस्तेऽर्केऽब्जे मघागते।
गजच्छायाभिओ योगः श्राद्धेऽक्षयफलप्रदः।।

(छ) खेटस्योपचयस्थस्य वारे कार्यं शुभावहम्।
तदेवोपचयस्थश्चेद् यत्नेनापि न सिद्धयति।।

3. वारकृत्यों पर एक विशद निबन्ध लिखिए। 10

द्वितीय वर्ग

4. निम्नलिखित श्लोकों का सोदाहरण अर्थ स्पष्ट कीजिए : 10

अस्तभादर्कभं तिथ्याहीनं मध्यमतोऽष्टभिः।

उदयर्क्षात्तथा व्येकं विंशतिघ्नं ग्रहैर्भवेत्।।
लग्धा घट्यादिका ज्ञेयाश्शेषा रात्रिः स्फुटाऽथवा।
सप्ताष्टनवहीनं च प्रस्तोदयप्रमाणतः।
मध्यमे तु विशेषोऽयं ज्ञेयो युक्तो विचक्षणैः।।

5. मुहूर्त्तगणपति के अनुसार नक्षत्रों के स्वरूप तथा तारा सङ्ख्या पर प्रकाश डालिए। 10

तृतीय वर्ग

6. अधोलिखित श्लोकों की विशद व्याख्या कीजिए- 10

(प) गुरूशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात्।
रवि शुद्धि वशाच्छुभो वराणामुभयोश्चन्द्र विशुद्धितो विवाहः।।

(फ) श्वश्रुविनाशमहिजौ सुतरां विधत्तः
कन्यासुतौ निर्ऋतिजौ श्वसुरं हतश्च।
ज्येष्ठाभजाततनया स्वअवाग्रजं च
शक्राग्रिजा भवति देवरनाशकत्री।।

7. अधोलिखित श्लोक की सोदाहरण विशद व्याख्या कीजिए-10

वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः।।